रूथ और ग्रीन बुक

केल्विन अलेक्जेंडर रैमसे

रेखांकन फ़्लॉइड कूपर

रूथ अपने परिवार की नई कार में यात्रा करने के लिए बहुत उत्साहित थी!

1950 के दशक की शुरुआत में, बहुत कम अफ्रीकी-अमेरिकी ही कार खरीदने का खर्च उठा सकते थे, इसलिए यह एक साहसिक कार्य था. लेकिन उसे जल्द ही पता चला कि कुछ शहरों में काले यात्रियों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था. कई होटलों और गैस स्टेशन अश्वेत लोगों को अपनी सेवाएं देने से मना करते थे. डैडी, "जिम क्रो" कानून नाम की किसी चीज़ को लेकर परेशान थे. अंत में, एक एसो (ESSO) स्टेशन पर एक दोस्ताना असिस्टेंट ने रूथ के परिवार को "द ग्रीन बुक" दिखाई. उसमें उन सभी स्थानों को सूचीबद्ध किया गया था जो काले यात्रियों का स्वागत करते थे. इस गाइडबुक के साथ - और अजनबियों की दया के कारण - रूथ अंततः शिकागो से ग्रामीण अलबामा में अपनी दादी के घर तक एक सुरक्षित यात्रा कर पाई.

रूथ की कहानी काल्पनिक है, लेकिन "द ग्रीन बुक" ने, अफ्रीकी-अमेरिकी यात्रियों की एक पीढ़ी को "जिम क्रो" कानूनों के आक्रोश से बचने में मदद करने में ज़रूर एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई.

रूथ और ग्रीन बुक

रूथ और
ग्रीन बुक
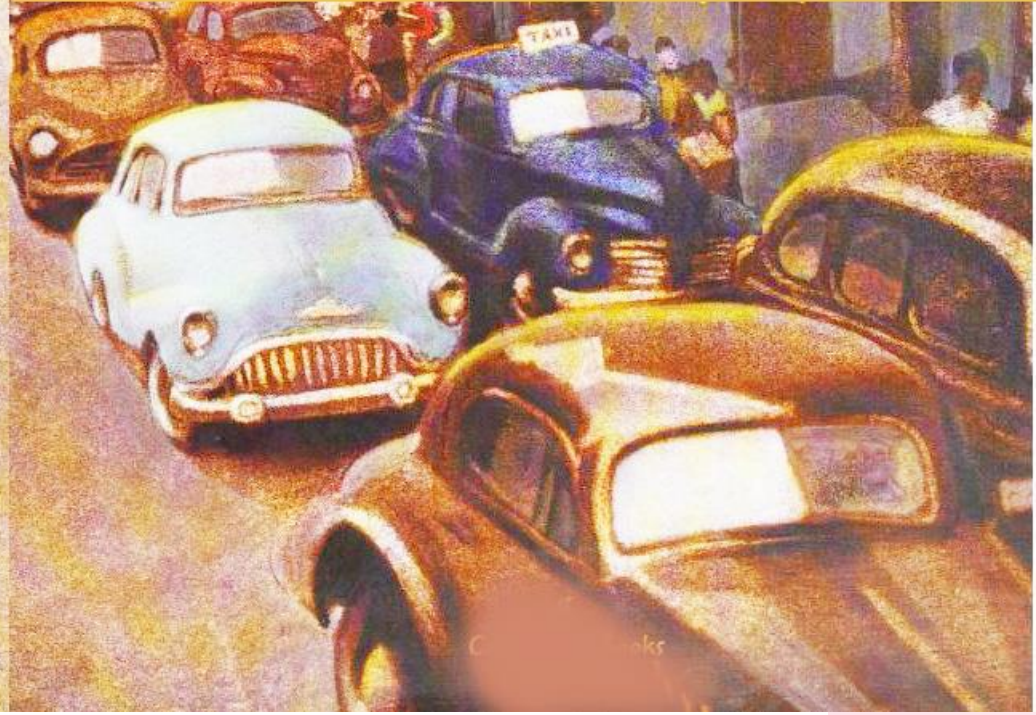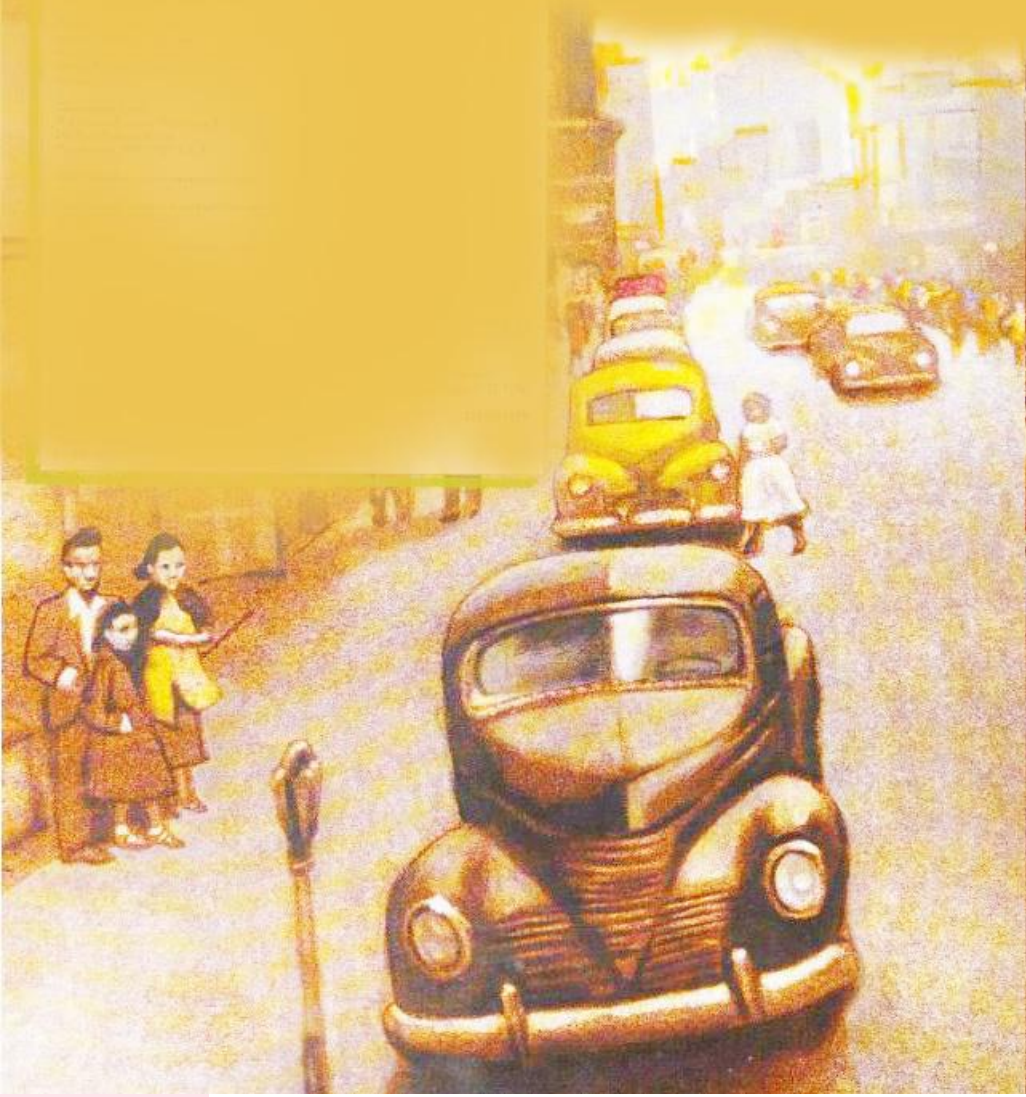
वो हमारे घर में एक बड़ा दिन था जब डैडी ने अपनी खुद की कार - 1952 ब्यूक गाड़ी चलाई! उसका बेहद सुंदर रंग था. डैडी उसे समुद्री हरा रंग कहते थे.

डैडी ने कार, अपनी नई नौकरी के लिए खरीदी थी, लेकिन उससे पहले, हमने अलबामा में दादी से मिलने के लिए यात्रा पर जाने की योजना बनाई.

मैं यात्रा के लिए बहुत उत्साहित थी! मैंने अपना बैग पैक किया, और माँ ने कहा कि मैं अपने कपड़े के भूरे-भालू को, कंपनी के लिए अपने साथ ले जा सकती थी. वैसे मैं उसके साथ खेलने के लिए अब काफी बड़ी हो चुकी थी.
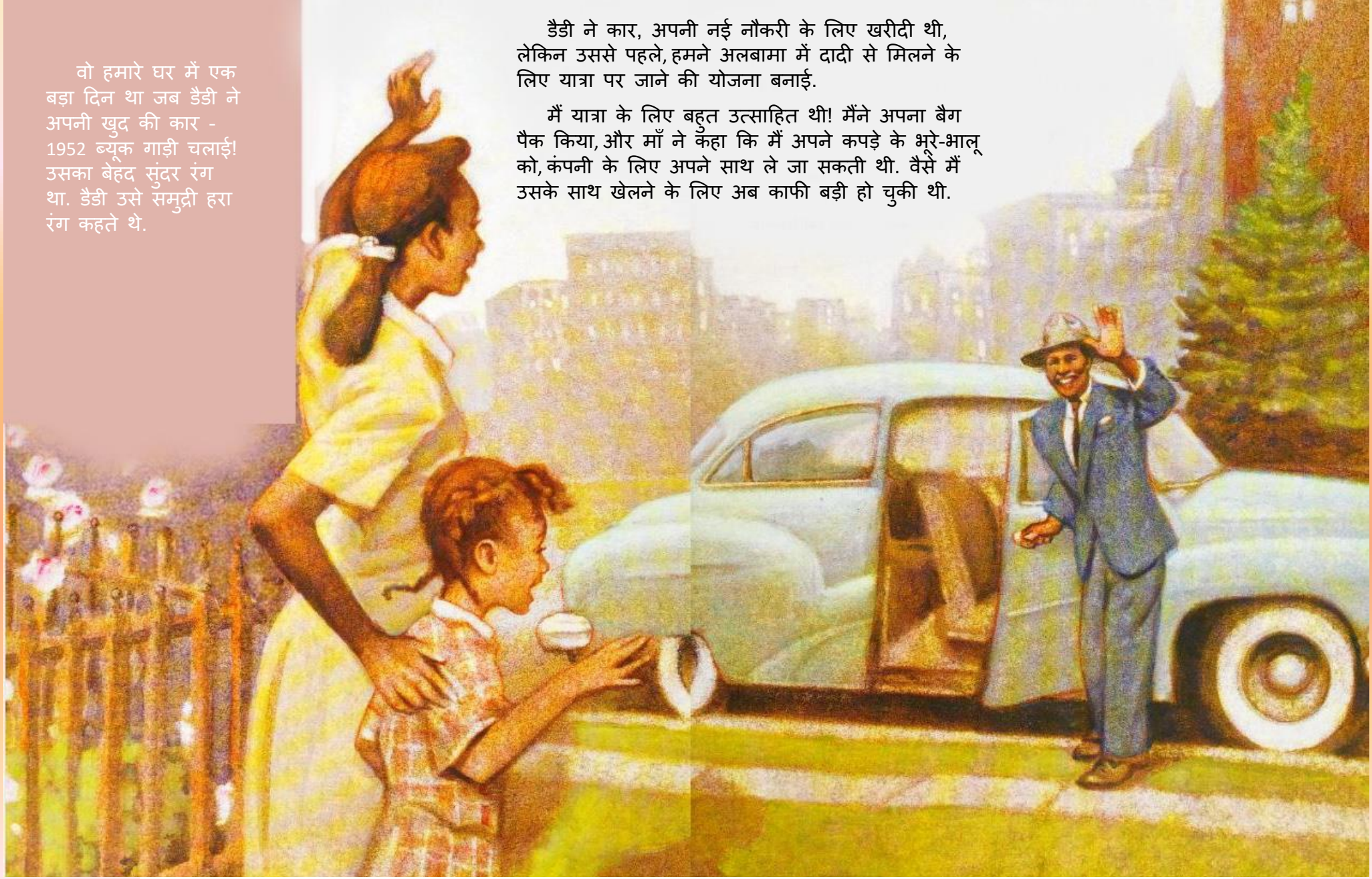
जैसे ही हम शिकागो से बाहर निकले, परिचित पड़ोस को गायब होते देखना और उसके बाद की सड़कें और इमारतें मुझे काफी अजीब लगीं.
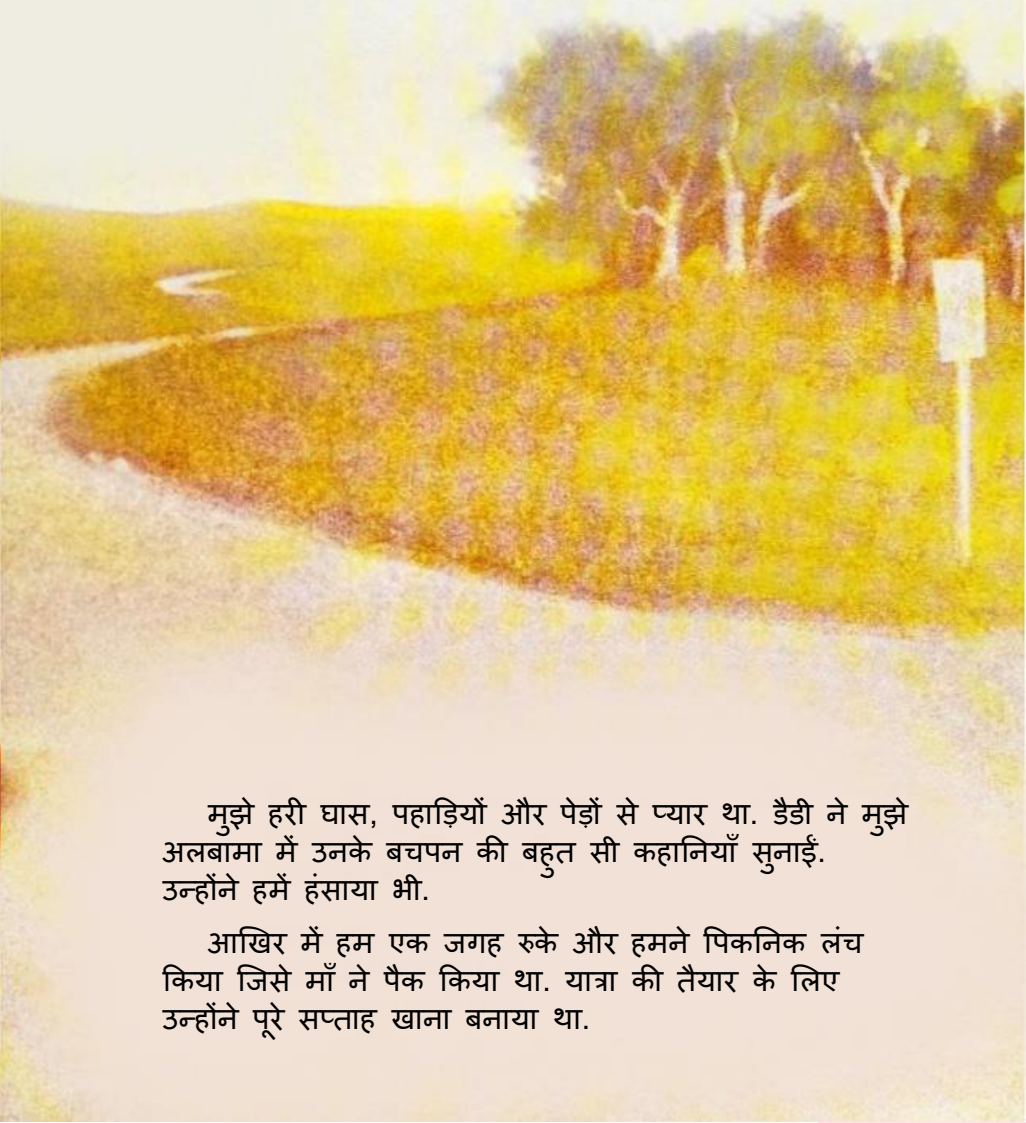
मुझे हरी घास, पहाड़ियों और पेड़ों से प्यार था. डैडी ने मुझे अलबामा में उनके बचपन की बहुत सी कहानियाँ सुनाईं. उन्होंने हमें हंसाया भी.

आखिर में हम एक जगह रुके और हमने पिकनिक लंच किया जिसे माँ ने पैक किया था. यात्रा की तैयार के लिए उन्होंने पूरे सप्ताह खाना बनाया था.
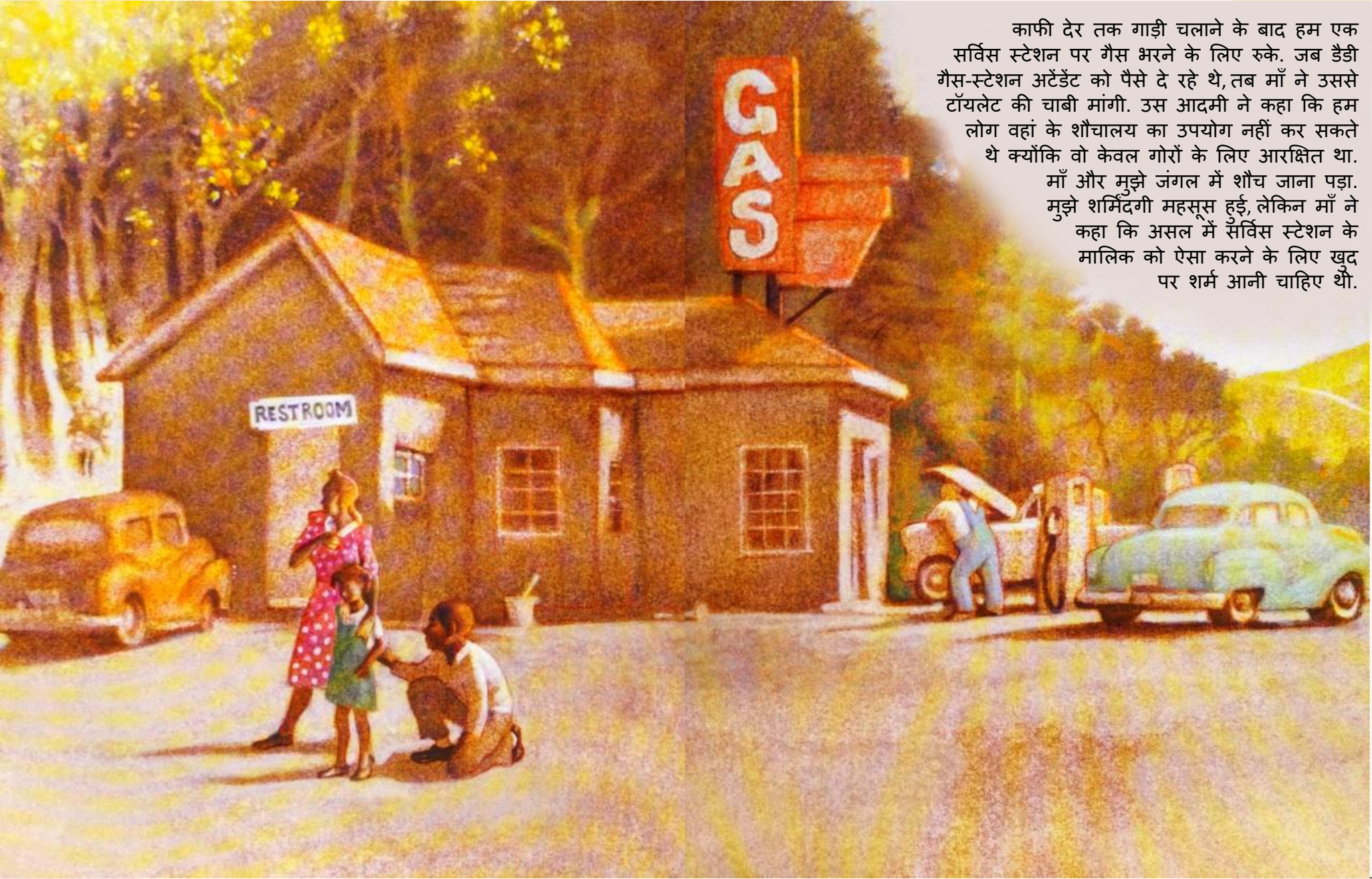
काफी देर तक गाड़ी चलाने के बाद हम एक सर्विस स्टेशन पर गैस भरने के लिए रुके. जब डैडी गैस-स्टेशन अटेंडेंट को पैसे दे रहे थे, तब माँ ने उससे टॉयलेट की चाबी मांगी. उस आदमी ने कहा कि हम लोग वहां के शौचालय का उपयोग नहीं कर सकते थे क्योंकि वो केवल गोरों के लिए आरक्षित था. माँ और मुझे जंगल में शौच जाना पड़ा. मुझे शर्मिंदगी महसूस हुई, लेकिन माँ ने कहा कि असल में सर्विस स्टेशन के मालिक को ऐसा करने के लिए खुद पर शर्म आनी चाहिए थी.

मैं थक गई थी जब डैडी ने गाड़ी रोकी.

मैंने माँ से पूछा कि हम कहाँ थे, और उन्होंने कहा कि हम एक असली होटल में रात बिताने जा रहे थे. हमने डैडी को, होटल की डेस्क के पीछे बैठे एक व्यक्ति से बात करते हुए देखा. डैडी फॉर्म भर रहे थे और हमारी ओर इशारा कर रहे थे. लेकिन फिर उस आदमी ने "न" में अपना सिर हिलाया और अपनी पीठ फेर ली.
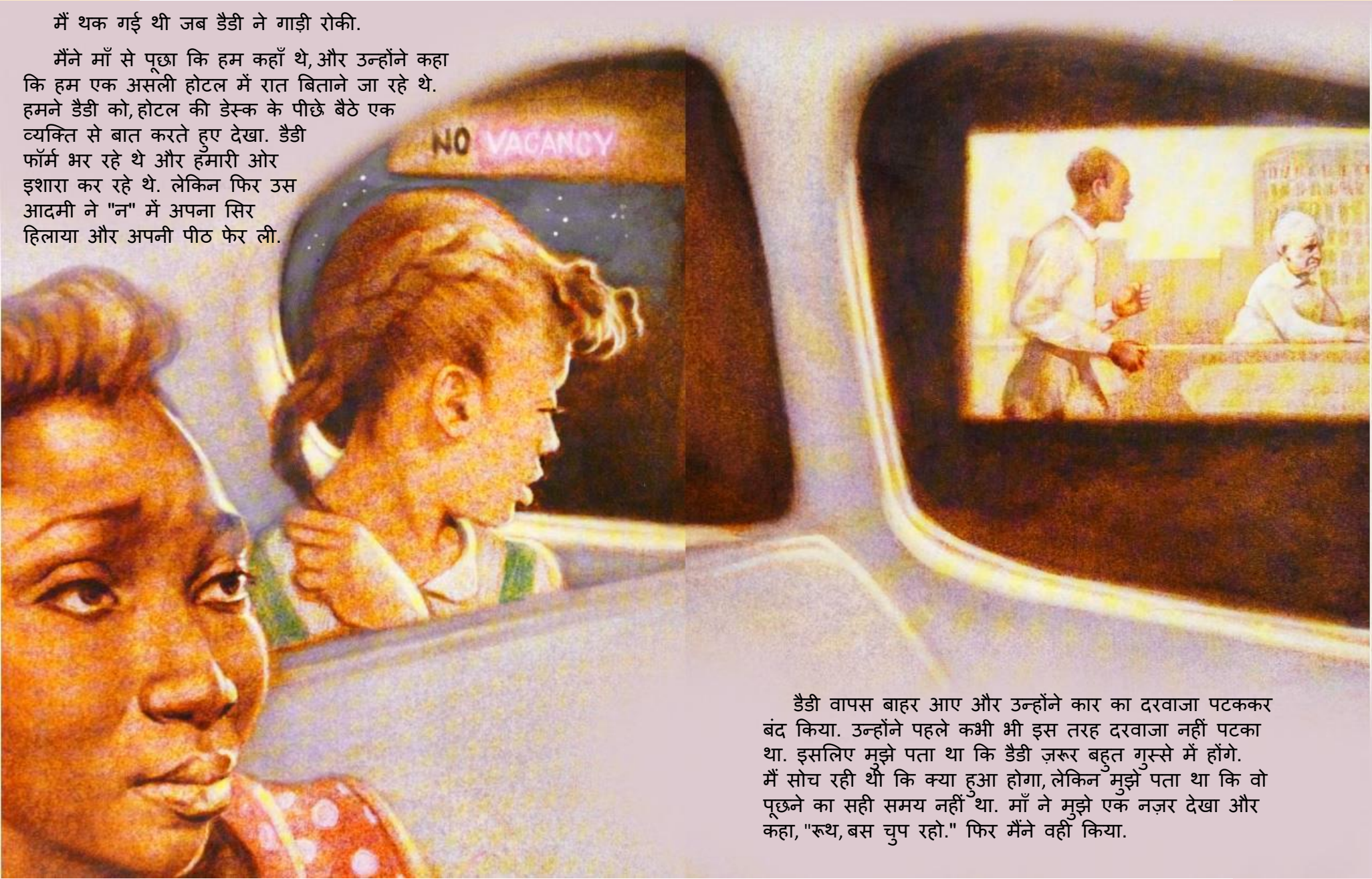
डैडी वापस बाहर आए और उन्होंने कार का दरवाजा पटककर बंद किया. उन्होंने पहले कभी भी इस तरह दरवाजा नहीं पटका था. इसलिए मुझे पता था कि डैडी ज़रूर बहुत गुस्से में होंगे. मैं सोच रही थी कि क्या हुआ होगा, लेकिन मुझे पता था कि वो पूछने का सही समय नहीं था. माँ ने मुझे एक नज़र देखा और कहा, "रूथ, बस चुप रहो." फिर मैंने वही किया.

डैडी रात भर गाड़ी चलाते रहे. माँ ने भी कुछ देर गाड़ी चलाई जिससे डैडी सो सकें. मैं अपने भूरे भालू का तकिए बनाया और सो गई. हम लोग आधी रात को सड़क के किनारे रुके होंगे, क्योंकि जब मैं सुबह उठी तो हम सभी कार में लेटे थे. मुझे भूख लगी थी. माँ ने हमें नाश्ते में बिस्किट और जैम दिया. माँ ने सुझाव दिया कि हमें खुद को खुश करने के लिए गाने गाएं.
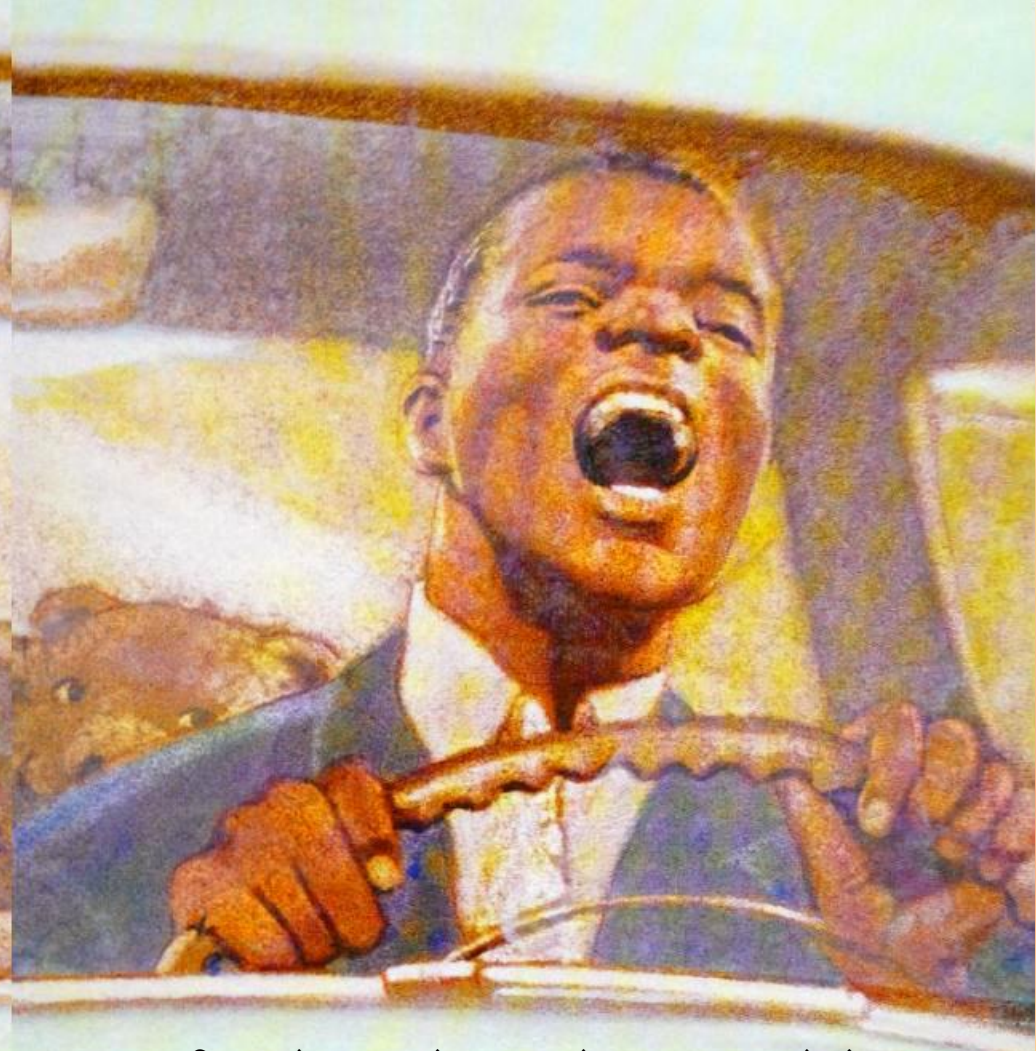
उस दिन हमने यात्रा करते हुए बहुत देर तक गाया. हमने लंच और डिनर सड़क के किनारे ही रुककर खाया क्योंकि सभी रेस्तरां की खिड़कियों में संकेत लगे थे कि अश्वेत वहां नहीं खा सकते थे. ऐसा लग रहा था कि शिकागो पड़ोस के बाहर हर जगह पर "केवल सफेद लोगों के लिए" चिन्ह लगे थे. मुझे घर की याद आ रही थी, और मैंने पूरे दिन भूरे भालू को अपने गले लगाए रखा.
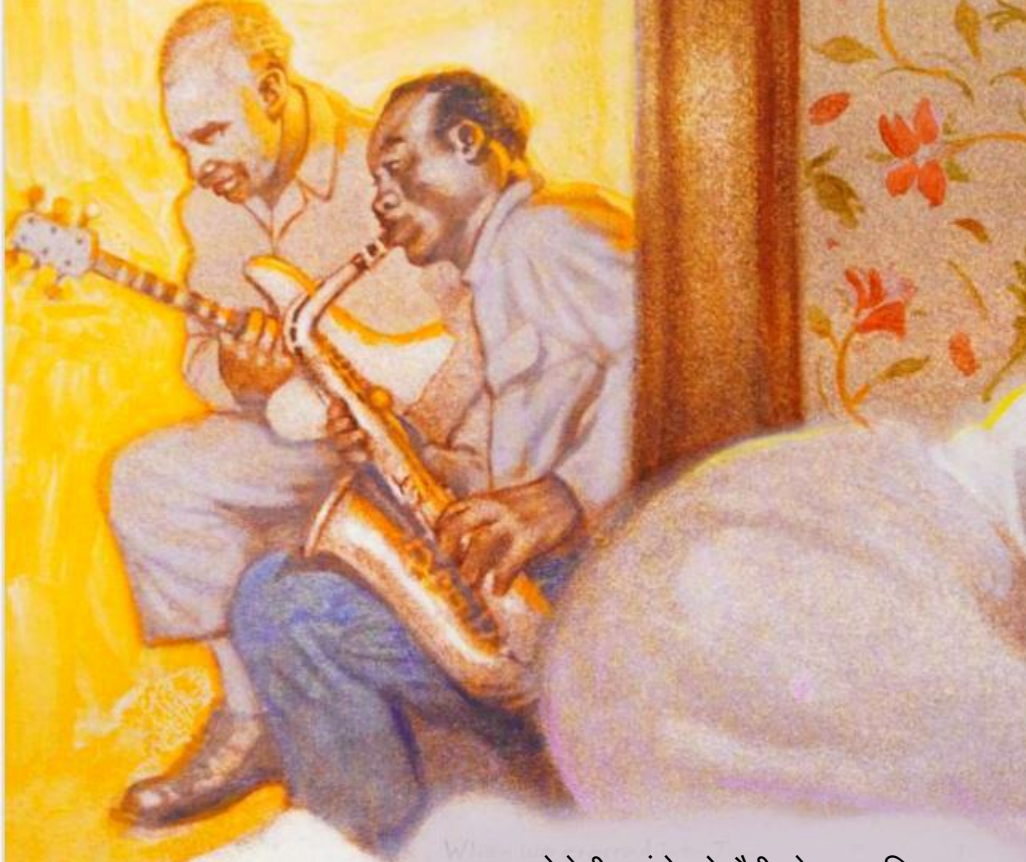
जब हम टेनेसी पहुंचे तो डैडी ने कहा कि उनका एक पुराना दोस्त, एडी, वहाँ रहता था. डैडी को पक्का यकीन था कि हम एडी के घर जाकर वहाँ सो सकते थे.

एडी हमें देखकर बहुत खुश हुआ! उसने मुझे गले लगाया और मुझसे कहा कि उसने मुझे तब देखा था जब मैं वाकई में छोटी थी. एडी की पत्नी ऐलिस ने हमारे लिए गरमा-गर्म खाना बनाया और फिर उस दिन मैंने बहुत ज्यादा खा लिया. युद्ध में जाने से पहले डैडी और एडी एक ही बैंड में संगीत बजाते थे. उन्होंने अपने पुराने दिनों के बारे में खूब बातें कीं. उन्होंने इस विषय के बारे में भी चर्चा की कि कैसे काले लोगों को यात्रा के दौरान आराम करने और खाने के लिए जगहें खोजने में बेहद मुश्किल आती थी. डैडी ने सिर हिलाया और कहा कि उन्हें उम्मीद थी कि युद्ध ने चीजें बदली होंगी, लेकिन अब वो देख सकते थे कि उनकी समझ गलत थी.

उस रात डैडी और एडी बहुत देर रात तक संगीत बजाते रहे पर मैं जल्द ही सो गई. उस रात भूरा भालू और मैं एक असली तकिए और एक असली बिस्तर पर सोकर बहुत खुश थे.
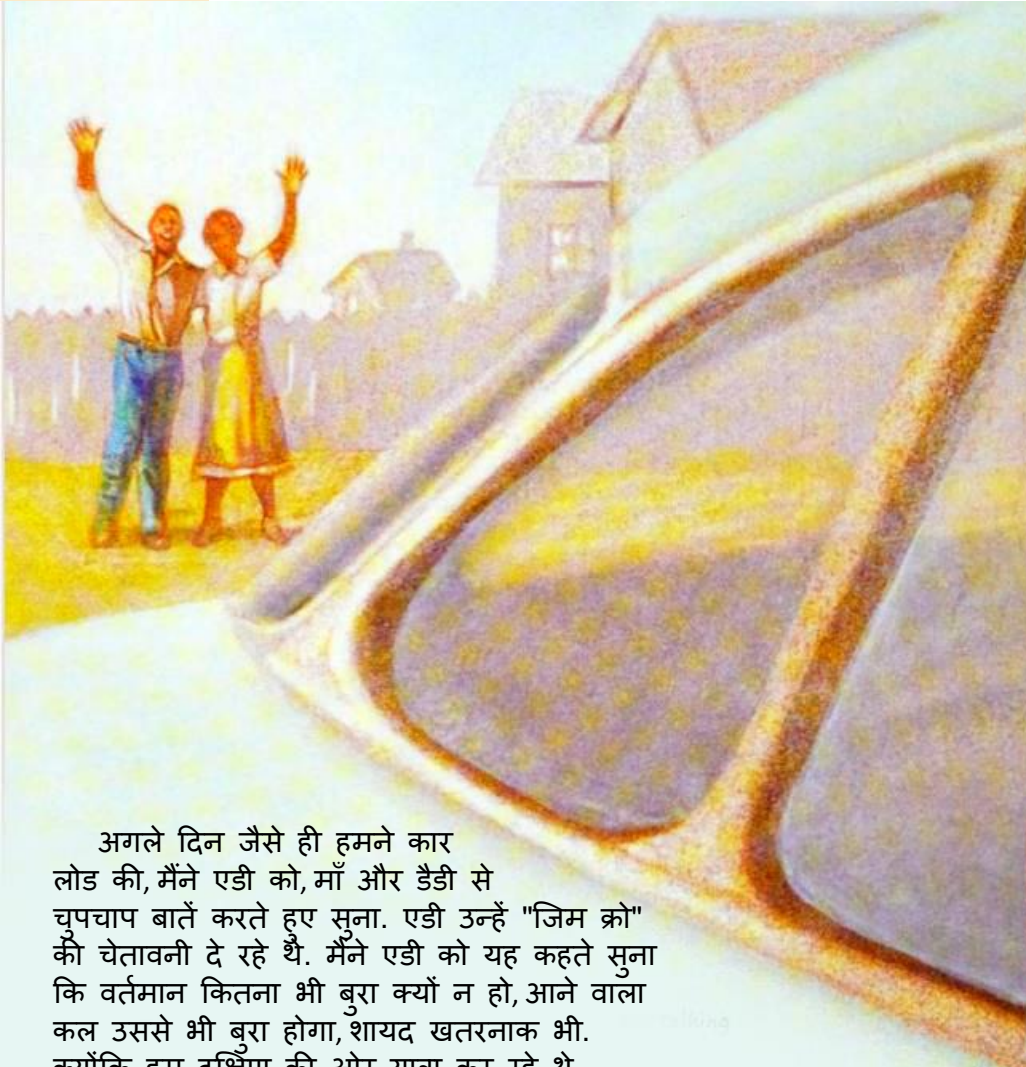
अगले दिन जैसे ही हमने कार लोड की, मैंने एडी को, माँ और डैडी से चुपचाप बातें करते हुए सुना. एडी उन्हें "जिम क्रो" की चेतावनी दे रहे थे. मैंने एडी को यह कहते सुना कि वर्तमान कितना भी बुरा क्यों न हो, आने वाला कल उससे भी बुरा होगा, शायद खतरनाक भी. क्योंकि हम दक्षिण की ओर यात्रा कर रहे थे इसलिए एडी ने मुझे उठाया और कहा कि मुझे चिंता नहीं करनी चाहिए. उन्होंने कहा कि मुझे सड़क के किनारे एसो (ESSO) सर्विस स्टेशनों की तलाश करनी चाहिए, क्योंकि वहां के लोग अश्वेत लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करते थे.

कार में, मैंने डैडी से पूछा कि जिम क्रो कौन था? और उन्होंने समझाया कि "जिम क्रो" कोई व्यक्ति नहीं था. "जिम क्रो" काले और गोरों को आपस में एक-साथ न आने वाले बदसूरत कानून थे. मैंने पूछा, "वे हम से बिज़निस क्यों नहीं करना चाहते हैं? क्या हमारा पैसा गोरों जैसा नहीं है?" इतने भेदभाव से मेरी भावनाओं को ठेस पहुंची थी. लेकिन माँ ने आह भरी और मुझे याद दिलाया कि उस दिन मेरा काम पूरे रास्ते में एस्सो (ESSO) स्टेशन तलाश करना था.
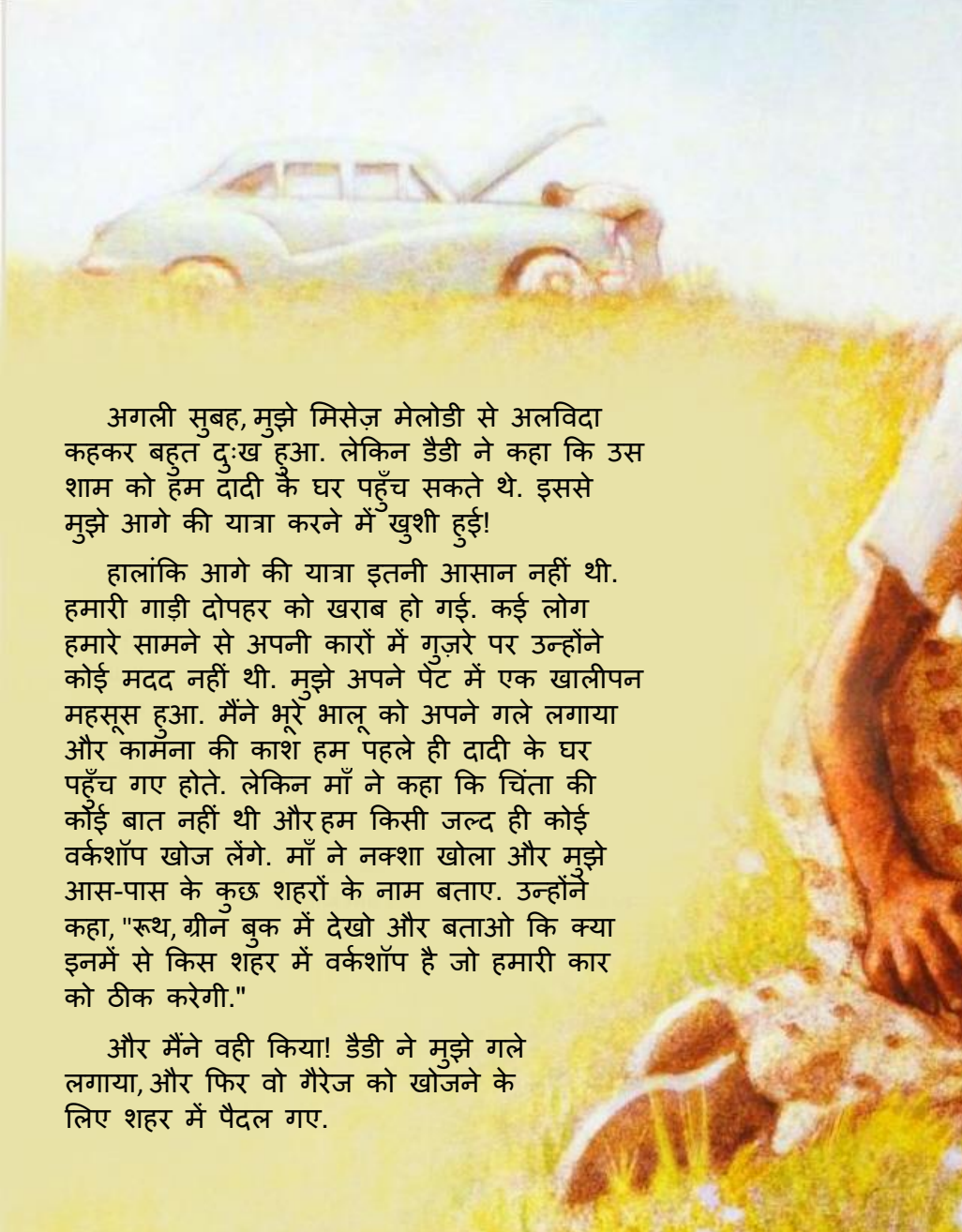
मैंने जॉर्जिया की सीमा के पास एक एसो (ESSO) स्टेशन देखा और डैडी से तुरंत रुकने को कहा. डैडी ने कार में गैस भरी और उन्होंने वहां के आदमी से पूछा कि क्या उसे पता था कि हम उस रात किस होटल में सो सकते थे. उस आदमी ने हमें "द नेग्रो मोटरिस्ट ग्रीन बुक" नाम का एक पैम्फलेट दिखाया. उसने समझाया कि इस पुस्तक को एक डाकिए, मिस्टर विक्टर एच. ग्रीन ने, यात्रा कर रहे काले लोगों की मदद करने के लिए छापी थी. उसमें कई राज्यों के ऐसे स्थानों को सूचीबद्ध किया गया था जो काले लोगों का सोने, खाने, खरीदारी करने, बाल कटवाने आदि के लिए स्वागत करते थे. उसके अलावा उस पैम्फलेट में अन्य जानकारी भी थी. डैडी ने उसकी एक प्रति, पचहत्तर सेंट में तुरंत खरीद ली.

माँ ने उस पैम्फलेट में पास के एक होटल बारे में पढ़ा जिसका नाम "टूरिस्ट होम" था. अपनी यात्रा की अंतिम रात हम वहां रुक सकते थे. पिताजी ने वहां फोन किया और निश्चित रूप से, वहां की महिला ने हमें बड़ी गर्मजोशी से वहाँ आने को कहा. फिर माँ ने मुझे ग्रीन बुक थमाई और कहा कि अब से मैं उस किताब की इंचार्ज थी. मैं उस किताब को पढ़ना बंद नहीं कर पाई. उसमें सभी राज्यों में उन स्थानों का उल्लेख था जहां काले लोग जाकर रह सकते थे और जहाँ उन्हें चिंता करने की ज़रुरत नहीं थी.

हम शाम हम "टूरिस्ट होम" पहुंचे. उसकी मालकिन मिसेज़ मेलोडी, ने दरवाजा खोलते ही हमें एक बड़ी मुस्कान दी. वहां, घर आने जैसा था. मिसेज़ मेलोडी ने डैडी से पैसे भी नहीं लिए. उन्होंने कहा कि वो हमेशा नीग्रो यात्रियों का स्वागत करती थीं क्योंकि एक-दूसरे की मदद करना एक सही काम था. मैंने भी बड़े होकर वैसा ही करने का निश्चय किया!

अगली सुबह, मुझे मिसेज़ मेलोडी से अलविदा कहकर बहुत दुःख हुआ. लेकिन डैडी ने कहा कि उस शाम को हम दादी के घर पहुँच सकते थे. इससे मुझे आगे की यात्रा करने में खुशी हुई!

हालांकि आगे की यात्रा इतनी आसान नहीं थी. हमारी गाड़ी दोपहर को खराब हो गई. कई लोग हमारे सामने से अपनी कारों में गुज़रे पर उन्होंने कोई मदद नहीं थी. मुझे अपने पेट में एक खालीपन महसूस हुआ. मैंने भूरे भालू को अपने गले लगाया और कामना की काश हम पहले ही दादी के घर पहुँच गए होते. लेकिन माँ ने कहा कि चिंता की कोई बात नहीं थी और हम किसी जल्द ही कोई वर्कशॉप खोज लेंगे. माँ ने नक्शा खोला और मुझे आस-पास के कुछ शहरों के नाम बताए. उन्होंने कहा, "रूथ, ग्रीन बुक में देखो और बताओ कि क्या इनमें से किस शहर में वर्कशॉप है जो हमारी कार को ठीक करेगी."

और मैंने वही किया! डैडी ने मुझे गले लगाया, और फिर वो गैरेज को खोजने के लिए शहर में पैदल गए.

हमारी गाड़ी ठीक होने में काफी देर लगी. दादी के घर पहुँचने में हमें बहुत देर हो गई थी इसलिए, मैंने ग्रीन बुक में देखा और पास में एक होटल को चुना जो नीग्रो यात्रियों का स्वागत करता था. वो एक बड़ा सा घर था जिसमें बहुत सारे कमरे थे. वहां अधिकांश लोग व्यवसायी थे जो अपने धंधों के सिलसिले में यात्रा कर रहे थे. उनमें से प्रत्येक के पास वो ग्रीन-बुक थी. उन्होंने कहा कि उस पुस्तक के बिना वे अपना काम कभी नहीं कर पाते!

हम जेसन नाम के एक सेल्समैन से मिले जिसने अपनी नौकरी के सिलसिले में सभी राज्यों की यात्रा की थी. उसने हमें इतनी मजेदार कहानियां सुनाईं कि माँ हँसते-हँसते लोटपोट हो गईं. जब से हमने घर छोड़ा था, तब से हम पहली बार सच में बहुत खुश थे.
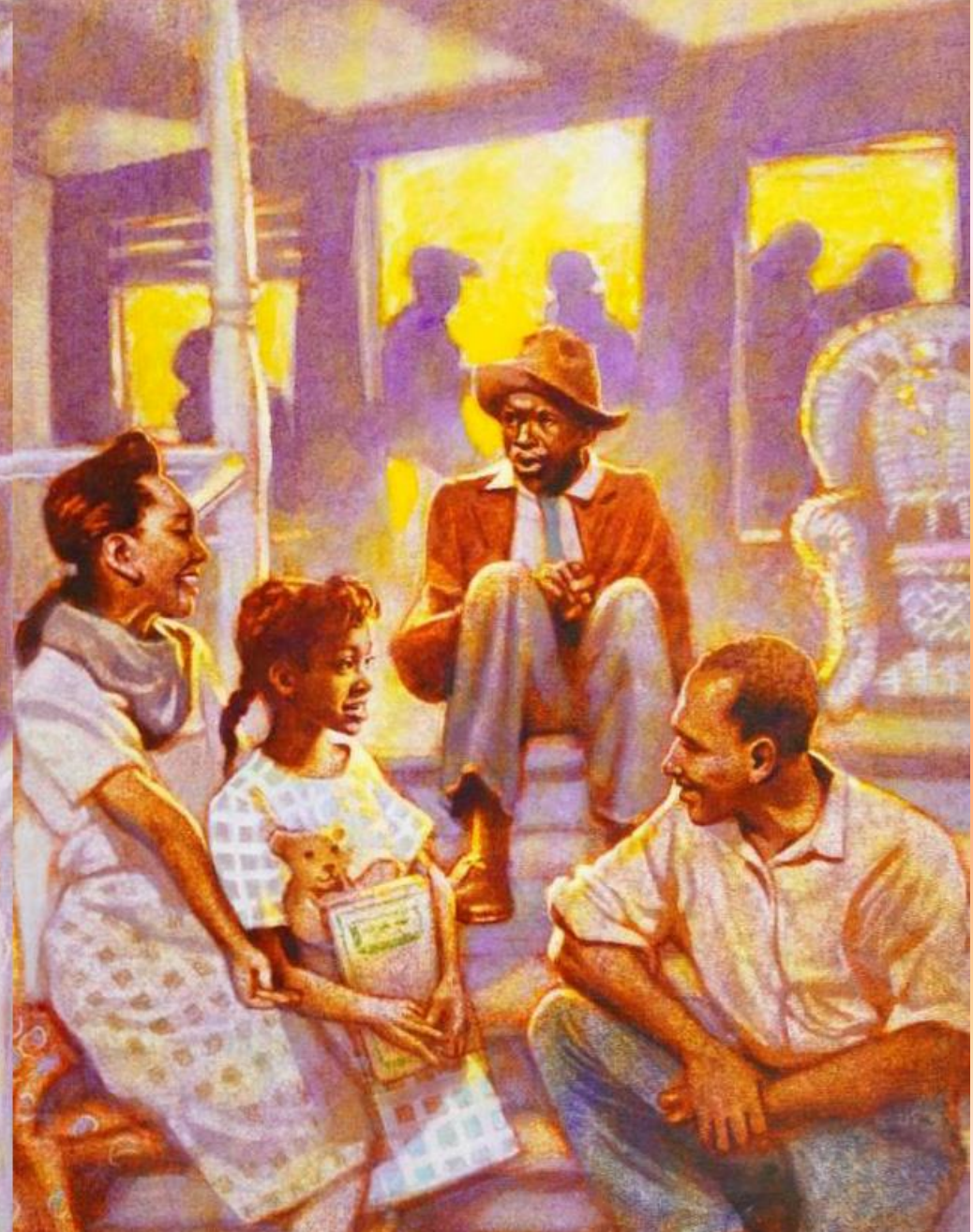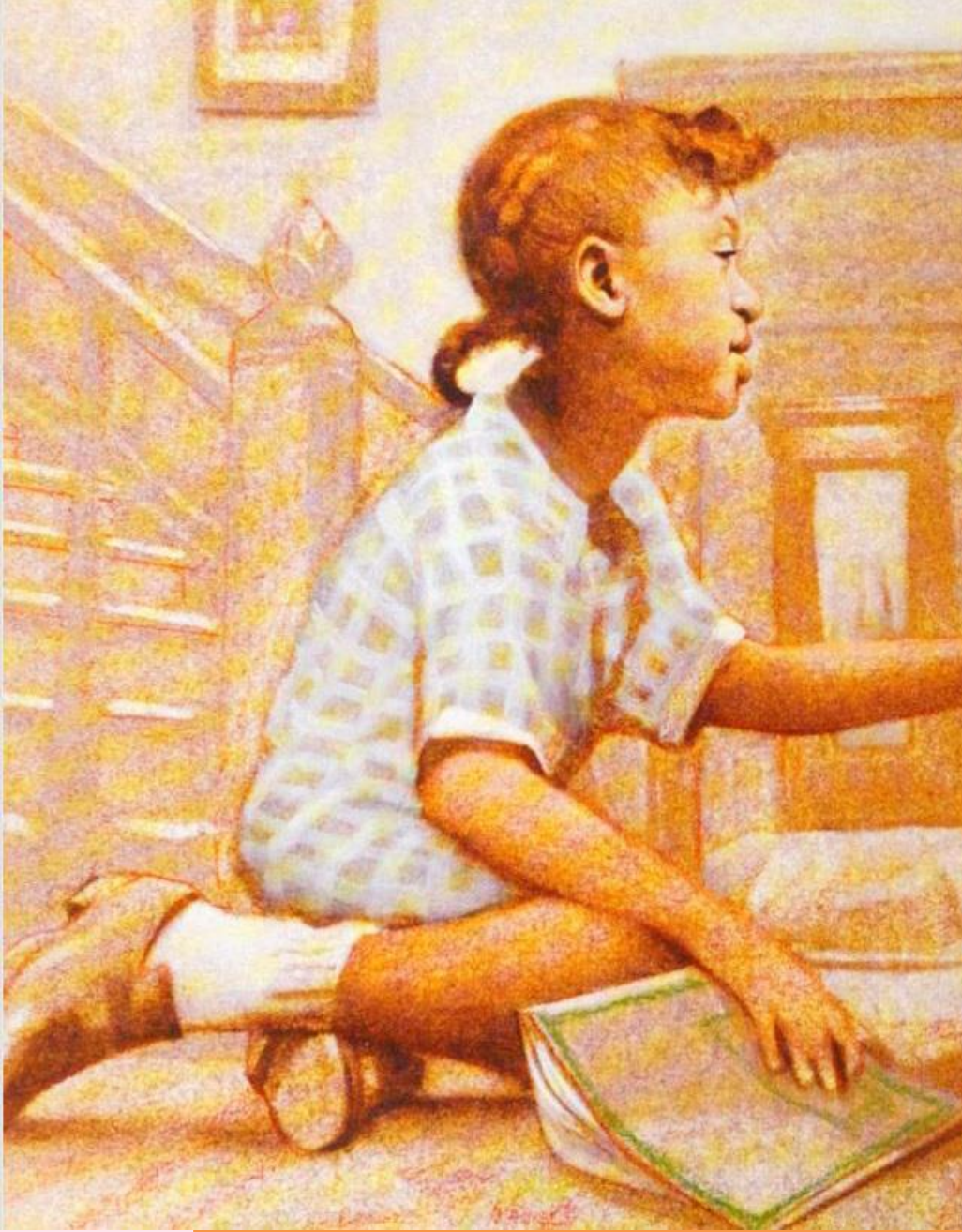
होटल में मैं, एक छोटे लड़के से मिली जो अपनी माँ के साथ यात्रा कर रहा था. वो पहली बार अपने घर से बाहर यात्रा कर रहा था. मैं बस इतना कह सकती थी कि वो बहुत डरा हुआ था. मैंने मिसेज़ मेलोडी, विक्टर ग्रीन, एडी और उन अन्य सभी लोगों के बारे में सोचा जिन्होंने हमारी मदद की थी, और फिर मैंने लड़के को अपना भूरा भालू देने का फैसला किया.
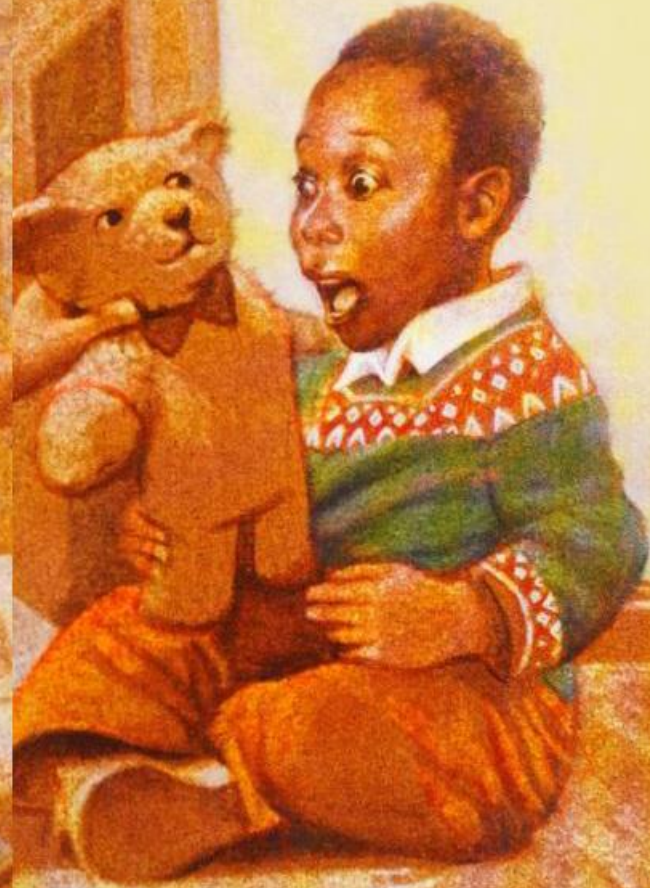
मैंने उससे कहा कि भूरा भालू एक अच्छा यात्री था. मैं अब भूरे भालू के साथ खेलने के लिए बहुत बड़ी हो गई थी, और उस छोटे लड़के को मुझसे ज्यादा उस भूरे भालू की जरूरत थी. फिर मैंने उसकी माँ को ग्रीन बुक के बारे में बताया और उन्हें अपनी प्रति दिखाई.

उस रात, सोने से पहले, मैंने अपनी यात्रा के बारे में सोचा. यात्रा वैसी नहीं थी जैसी मैंने अपेक्षा की थी - यात्रा करना निश्चित रूप से डरावना हो सकता था! मुझे यह देखकर बहुत दुख हुआ कि कुछ लोग, नीग्रो लोगों के प्रति काफी मतलबी थे.

लेकिन मुझे यह जानकार ख़ुशी हुई कि पूरे देश में अच्छे अश्वेत लोगों ने, एक-दूसरे की मदद करने के लिए आगे आना शुरू कर दिया था. मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक बड़े परिवार का हिस्सा हूँ! इसके अलावा, कल मैं दादी से मिलूंगी और उन्हें बताऊंगी कि मैं उस महान ग्रीन-बुक की गाइड थी.

"नीग्रो मोटरिस्ट ग्रीन बुक" का इतिहास

मुक्ति उद्घोषणा और दासता समाप्त होने के दशकों बाद भी, अफ्रीकी-अमेरिकियों ने असमान व्यवहार का सामना करना जारी रखा, विशेष रूप से दक्षिण में, जहां "जिम क्रो" कानूनों ने, यात्रा सहित सार्वजनिक जीवन के लगभग हर पहलू में, अश्वेतों के साथ भेदभाव किया था. हालाँकि काले लोग सड़कों और राजमार्ग सभी के उपयोग के लिए स्वतंत्र थे, लेकिन ऐसा करना अश्वेतों के लिए आसान नहीं था. अधिकांश होटल और रेस्तरां अफ्रीकी-अमेरिकियों की सेवा नहीं करते थे, और रात भर गाड़ी चलाने का मतलब अक्सर कारों में सोना और यात्रा के दौरान खाना पैक करके साथ में ले जाना होता था. कई गैस स्टेशन काले ड्राइवरों को गैस तक नहीं बेचते थे, इसलिए उन्हें अपने साथ में गैस के टीन ले जाने पड़ते थे और वे हमेशा कुछ ऐसे स्टेशनों की तलाश में रहते थे जो उनका स्वागत करें. फिर भी, उन्हें सार्वजनिक शौचालय का उपयोग करने की अनुमति नहीं थी.

1936 में न्यू यॉर्क शहर में रहने वाले एक अफ्रीकी-अमेरिकी विक्टर ग्रीन ने, काले यात्रियों के लिए एक किताब लिखी. इसमें उन्होंने उन सभी होटलों, रेस्तरां, गैस स्टेशनों और व्यवसायों की सूची बनाई जो उनके शहर में अफ्रीकी-अमेरिकियों की सेवा करते थे. उनकी पुस्तक की इतनी अधिक मांग हुई कि उन्होंने फैसला किया कि अगले संस्करण में वो अन्य राज्यों के शहरों को भी शामिल करेंगे.

ग्रीन बुक 1940 में, काले-स्वामित्व वाली दुकानों और एसो (ESSO) स्टेशनों पर एक-चौथाई डॉलर में बिकती थी. अफ्रीकी-अमेरिकियों को गैस बेचने वाले एस्सो (ESSO) एकमात्र गैस स्टेशन थे. एस्सो (ESSO) का स्वामित्व स्टैंडर्ड ऑयल कंपनी के पास था, और ESSO ने अंततः विक्टर ग्रीन को पुस्तक के लिए धन और उसे बेचने की सुविधा प्रदान की. ग्रीन बुक जल्दी से बहुत लोकप्रिय हो गई और फिर सड़कों पर कई अश्वेत लोग अपने परिवारों के साथ कारों से यात्रा करने लगे.

1949 तक ग्रीन बुक की कीमत उसके आकार के साथ-साथ बढ़ गई - उसकी कीमत 75 सेंट हुई और अब उसमें 80 पृष्ठ थे. पुस्तक ने पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका, बरमूडा, मैक्सिको और कनाडा को कवर किया!

1950 और 1960 के दशक की शुरुआत में, मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे नागरिक अधिकार नेताओं ने अफ्रीकी-अमेरिकियों द्वारा झेले गए अन्याय को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर रखा. अब "जिम क्रो" के दिन इने-गिने थे. 1 जुलाई, 1964 को, राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने नागरिक अधिकार विधेयक पर हस्ताक्षर करके उसे एक कानून बनाया. इस अधिनियम ने होटल, रेस्तरां और गैस स्टेशनों के लिए ग्राहकों के साथ रंग के आधार पर भेदभाव करना, अवैध बना दिया.

उसी वर्ष विक्टर ग्रीन ने ग्रीन बुक का अंतिम संस्करण प्रकाशित किया. अफ्रीकी-अमेरिकी यात्रियों के साथ समान व्यवहार करने का उनका आजीवन सपना आखिरकार एक वास्तविकता बन गया था.

वास्तविक ग्रीन बुक की प्रति को ऑनलाइन देखने के लिए www.ruthandthegreenbook.com पर जाएं.